Sundardās (1596-1689) was a prominent disciple of Dādūdayāl (1544-1603) and was an expert of poetic art in the saint tradition (the *sant paramparā*). Dādū dayāl's sect is called the Dādūpanth (the path of Dādū) and its main centers are in Rajasthan. The Dādūpanthī Rāghavdās, in his *Bhaktamāl* (Garland of devotees, c.1660), writes that Sundardās was from the merchant caste and was educated in Banaras at an early age. His monastery (*matha*) was in Fatehpur—a small town in the modern-day Sikar district of Rajasthan—where he arguably wrote most of his works. Sundardās's poetry illustrates his engagement with the *rīti* (courtly) poetic tradition as well as with the philosophies of Yoga, Samkhya, Advaita Vedanta and Sufi thoughts.

Text: Sundar Granthāvalī [collected works of Sundar], in two volumes, edited by Rameshchandra Mishra, New Delhi: Kitabghar, 1992. In this selection for Braj retreat, volume and page numbers are given for each chosen verse, and metrical forms, i.e. *doha, Kabitt* etc. are specified. All translations are mine.

Dalpat S Rajpurohit
The University of Texas at Austin

[1]

नख शिख शुद्ध कवित्त पढ़त अति नीकौ लग्गै।
अंग हीन जो पढ़ै सुनत कविजन उठि भग्गै॥
अक्षर घटि बढ़ि होइ खुड़ावत नर ज्यौं चल्लै।
मात घटै बढ़ि कोइ मनौ मतवारौ हल्लै॥
औढेर कांण सो तुक अमिल, अर्थहीन अंधो यथा।
कहि सुन्दर हरिजस जीव है, हरिजस बिन मृत कहि तथा॥ [*Chappay 1, vol.2 p.1143)*]

सुन्दर वचन सु त्रिबिध हैं उत्तम मध्य कनिष्ट।
एक कटुक इक चरपरै एक वचन अति मिष्ट॥ [*doha 15, vol. 1 p.435*]

सुन्दर घर ताजी बंधे तुरकिन की घुरसाल।
ताकै आगे आइ के टटुवा फैरे बाल॥ [*doha 17, vol. 1 p.435*]

रचना करी अनेक बिधि भलौ बनायो धाम।
सुन्दर मूरति बाहरी, देवल कौंने काम॥ [*doha 25, vol.1 p.436*]

बोलिये तौ तब जब बोलिबे की सुधि होइ ।
न तौ मुख मौंन करि चुप होइ रहिये ।।
जोरिये ऊ तब जब जोरिबौ ऊ जांनि परै।
तुक छंद अरथ अनूप जामैं लहिये ।।
गाइये ऊ तब जब गाइबे कौ कंठ होइ।
श्रवण के सुनत ही मन जाइ गहिये ।।
तुक भंग छंद भंग अरथ न मिले कछु ।
सुन्दर कहत ऐसी बांनी नहिं कहिये ।। [*Kabitt 4, vol.2 p.791*]

एक बांणी रूपवंत भूषन बषन अंग ।
अधिक बिराजमान कहियत ऐसी है ।।
एक बांणी फाटे टूटे अंबर उढ़ाये आंनि ।
ताहू मांहि बिपरीति सुनियत तैसी है ।।
एक बांणी मृतकहि बहुत सिंगार किये ।
लोकनि को नीकी लगै संतनि को भै सी है ।।
सुन्दर कहत बाणीं त्रिबिध जगत मांहि ।
जानै कोऊ चतुर प्रबीन जाकै जैसी है ।। [*Kabitt 2, vol.2 p.790*]

रसिक प्रिया रस मंजरी और सिंगार हि जांनि ।
चतुराई करि बहुत बिधि विषैं बनाई आंनि ।।
विषैं बनाई आंनि लगत विषयन कौं प्यारी ।
जागै मदन प्रचण्ड सराहैं नख शिख नारी ।
ज्यौं रोगी मिष्ठान खाइ रोगहि बिस्तारै ।
सुन्दर यह गति होइ जुतौ रसिक प्रिया धारै ।। [*kundaliya 5, vol.2 p.756*]

जाति जिती सब छंदन की बहु सीप भई इहिं सागर माहीं ।
है तिन मैं मुक्ताफल अर्थ लहैं उनकौं हितसौं अवगाहीं ।।
सुन्दर पैठि सकै नहिं जीवत दै डुबकी मरिजीवहि जाहिं ।
जे नर जान कहावत हैं अति गर्व भरे तिनकी गमि नाहीं ।। [*savaiya 7, vol.1 p.5*]

सदा प्रसन्न सुभाव प्रगट सर्बोपरि राजय ।
तृप्त ज्ञान विज्ञान अचल कूटस्थ बिराजय ।।

सुख निधान सर्वज्ञ मान अपमान न जानै ।
सारासार बिबेक सकल मिथ्या भ्रम मानै ।।
पुनि भिद्यन्ते हृदि ग्रंथि कौं छिद्यन्ते सब संशयं ।
कहि सुन्दर सो सद् गुरु सही चिदानंदघन चिन्मयं ।। [*chappay 15, vol.1 p.8*]

[2]

जो कोउ राम बिना नर मूरख औरन के गुन जीभ भनैगी ।
आंनि क्रिया गढ़तें गड़वा पुनि होत है भेरि कछू न बनैगी ।।
ज्यौं हथफेरी दिखावत चांवर अंत तौ धूरि की धूरि छनैगी ।
सुन्दर भूल भई अतिसै करि 'सूते की भैंस पडाइ जनैगी'।। [*savaiya 18, vol.2 p.783*]

मुख सौं कहत ज्ञान भ्रमै मन इन्द्री प्रांन,
मारग के जल में न प्रतिबिम्ब लहिये ।
गांठी में न पैका कोऊ भयौ रहे साहूकार,
बातनि ही मुहर रुपैया गनि गहिये ।।
स्वपनै मैं पंचामृत जीमि के त्रिपति भयो,
जागै तें मरत भूख खाइबे कौं चहिये ।
सुंदर सुभट जैसैं काइर मारत गाल,
'राजा भोज सम कहाँ गांगौ तेली कहिये'।। [*savaiya 3, vol.2 p.786*]

[3]

बृच्छ न नीर न उत्तम चीर सु देसन मैं गत देस है मारू ।
पाँव में गोखरू भुर्ट गडै अरु आंखि मैं आइ परै उडि बारू ।।
राबरि छाछि पिवै सब कोइ जु ताहि तैं खाज रतैंधुर न्हारू ।
सुन्दरदास रहौ जिन बैठि कै बेगि करौ चलिबै कौ बिचारू ।। [*savaiya 6, vol.2 p.1170*]

[4]

सेस महेस गनेस दिनेस सुरेसहु जाही निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुबेद बतावैं॥
नारद से सुक व्यास रहैं पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरि छाछ पै नाच नचावै॥ [*Sujan Raskhani (Mishra: 1964), savaiya 13*]

शेष महेश गनेश जहाँ लग विष्णु विरंचिहु कै सिर स्वामी।
व्यापक ब्रह्म अखंड अनावृत बाहरि भीतर अन्तरयामी॥
वोर न छोर अनंत कहैं गुण याहि तैं सुंदर है घन नांमी।
ऐसौ प्रभू जिन कै सर ऊपर क्यों परिहै तिनकी कहि खांमी॥ [*savaiya 8, vol.2 p.799*]

[5]

दरवेश दर की ख़बर जानै दूर दिल की काफ़िरी।
दर दरदबंद खरा दरुनै उसी बीच मुसाफ़िरी॥
है बेतमा इसमाई हरदम पाक दिल दर हाल है।
यौं कहत सुन्दर कब्ज़ दुन्दर अजब ऐसा ख्याल है॥ [*Harigitika 2, vol.1 p.261*]

[6]

<u>राग मल्हार</u>

हम पर पावस नृप चढि आयौ।
बादल हस्ती हवाई दामिनि गरजि निसान बजायौ॥
पवन तुरंगम चलत चहुँ दिश बूंद बान झर लायौ।
दादुर मोर पपीहा पाइक मारै मार सुनायौ॥
दशहू दिशा आइ गढ घेर्यौ बिरहा अनल लगायौ।
जइये कहाँ भागि कैं सजनी रजनी दुन्द उठायौ॥
को अब करै सहाइ हमारी पिय परदेशहि छायौ।
सुन्दरदास बिरहनी ब्याकुल करिये कौंन उपायौ॥ [*pad 177, vol.2 p. 1070-71*]

[7]

जनम सिरानौ जाय भजन बिमुख सठ,
काहे कौं भवन कूप बिन मीच मरि है।
गहित अविद्या जांनि शुक नलिनी ज्यों मूढ़
करम विकरम करत नहिं डर है॥
आपु ही तैं जात अंध नरकन बार बार
अजहू न शंक मन मांहिं अब करि है।
दुख कौ समूह अवलोकि कै न त्रास होइ
सुंदर कहत नर नागपासि परि है॥ [*Kabitt 21, vol.2 p.1138*]